हिन्दी विभाग
स्नातक तृतीय (III)
पत्र संख्या :- 08

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन परिचय

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म 9 सितम्बर 1850 ई० को काशी के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ था उनके पिता गोपालचंद्र एक अच्छे कवि थे, 'गिरधरदास' उपनाम से कविता लिखा करते थे, 1857 ई० में प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय उनकी आयु 7 वर्ष की होगी ये दिन उनके आँख खुलने की थी, भारतेन्दु का कृतित्व साक्ष्य है कि उनकी आँखे एक बार खुली तो बन्द नहीं हुई, भारतेन्दु जी पाँच वर्ष के थे तब उनकी माता की मृत्यु और दस वर्ष के थे तो पिता की मृत्यु हो गयी। इस प्रकार बचपन में ही माता-पिता के सुख से वंचित हो गये। बचपन का सुख नही मिला। शिक्षा की व्यवस्था प्रथापालन के लिए होती रही।

संवेदनशील व्यक्ति के नाते उनमें स्वतंत्र रूप से देखने - सोचने और समझने की आदत का विकास होने लगा।

उनको काव्य विरासत उनके पिता से मिली थी। भारतेन्दु की मृत्यु 6 जनवरी 1885 ई० को हुआ था। वाराणसी उत्तर प्रदेश में। भारतेन्दु बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। हिन्दी पत्रकारिता, नाटक और काव्य के क्षेत्र में उनका बहुमूल्य योगदान रहा। हिन्दी में नाटकों का प्रारंभ भारतेन्दु से ही माना जाता है। प्रमुख कृतियाँ — वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति, सत्य हरिश्चन्द्र, श्री चन्द्रावली, भारत-दुर्दशा, अन्धेर नगरी आदि नाटक है।

काव्य कृतियाँ — प्रेम मालिका, प्रेम-माधुरी, प्रेम-तरंग, प्रेम-प्रलाप, होली, राग संग्रह, वर्षा-विनोद, विनय प्रेम पचासा, प्रेम फुलवारी आदि की रचना की।

भारतेन्दु जी ने मात्र चौंतीस वर्ष की अल्पायु में ही विशाल साहित्य की रचना की उन्होंने मात्रा और गुणवत्ता की दृष्टि से इतना लिखा और इतनी दिशाओं में काम किया की उनका समूचा रचनाकर्म पथप्रदर्शक बन गया।

प्रस्तुतकर्ता
कैलाश कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय
हाजीपुर
मो० नं०-8292227041